पाठ–6

मुझे व्यक्ति-पूजा पसंद नहीं

–डॉ० भीमराव अंबेदकर

पाठ की संरचना

6.1 आइए शुरू करें
6.2 उद्देश्य
6.3 मूल पाठ
6.4 आइए समझें
6.5 भाषा-शैली

6.1 आइए शुरू करें

हमारे अगल-बगल आए दिन प्राय: किसी-न-किसी की जयंती मनाई जाती है। कहीं-कहीं जीवित राजनैतिक नेताओं की भी जयंती मनाई जाती है। अच्छे नेता इसका विरोध करते हैं। डा० अंबेडकर भी ऐसे ही नेताओं में एक थे।

हमारे जीवन में संघर्ष और त्याग का बड़ा महत्त्व है। किसी भी व्यक्ति को जीवन में उन्नति करने के लिए तरह-तरह के कष्ट सहने पड़ते हैं। इस लेख में यही बताया गया है।

6.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- इस लेख के भावार्थ को स्पष्ट कर सकेंगे।
- व्यक्ति पूजा से होने वाली हानि को बता सकेंगे।
- जीवन में परिश्रम और त्याग के महत्त्व का वर्णन कर सकेंगे।
- किसी बात को प्रभावशाली ढंग से कहने की कला सीख सकेंगे।
- लेखक की भाषा शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

और किस-किस महापुरुष ने व्यक्ति पूजा का विरोध किया है? जानकारी प्राप्त कर लिखिए।

6.3 मूल पाठ

मेरे पचपनवें जन्म दिन के अवसर पर प्रकाशित होनेवाले विशेषांक के लिए आप लोगों ने मुझे सन्देश भेजने के लिए कहा है। भारत में राजनीतिक नेता को किसी धर्मसंस्थापक के स्थान पर स्थापित किया जाता है, यह बड़ी खतरनाक बात है। अन्य राष्ट्रों में लोग अपने-अपने धर्मसंस्थापकों की जयंती बड़े उत्साह के साथ मनाते हैं। किन्तु सिर्फ भारत में धर्म-पुरुषों की तरह राजनीतिक नेताओं की जयन्ती के अवसर पर उत्सव मनाए जाते हैं, ऐसा होना बड़ी गम्भीर बात है। मेरा जयन्ती मनाना मुझे खुद अच्छा नहीं लगता। मैं इतना ज्यादा जनतन्त्रवादी हूँ कि मुझे व्यक्ति-पूजा बिल्कुल पसन्द नहीं है। क्योंकि व्यक्ति-पूजा जनतन्त्र के खिलाफ है। कोई नेता सम्मान के, प्रेम के, आदर के और प्रशंसा के योग्य हो तो उस नेता के सम्बन्ध में इस तरह की भावनाएँ व्यक्त करना उस नेता के लिए और लोगों के लिए भी पर्याप्त है। लेकिन नेता की पूजा के लिए निश्चित तौर पर खुली छूट नहीं दी जा सकती। यह बात दोनों को नीतिभ्रष्ट करनेवाली है। फिर भी यह मूल मुद्दे के बाहर की चीज है ऐसा मैं मानता हूँ। किसी नेता को आप लोगों ने धर्मसंस्थापक के स्थान पर एक बार स्थापित कर दिया तो फिर उसे धर्मसंस्थापक का अभिनय करना ही पड़ेगा और धर्मसंस्थापकों ने अपने अनुयायियों को जो संदेश दिया वह सन्देश भी उसे अपने अनुयायियों को देना ही पड़ेगा!

मैं अपने अछूत भाइयों को कौन सा संदेश दे सकता हूँ ? मैं उन्हें सन्देश-वन्देश नहीं दे सकता। किन्तु उन्हें मैं ग्रीक पौराणिक साहित्य की एक कहानी बताना चाहता हूँ और उसके तत्त्व की ओर निर्देश करना चाहता हूँ। यह कहानी होमर के स्त्रोत में ग्रीक देवता डिमेटर के संबध में है। कहानी इस तरह है कि महान देवता डिमेटर अपनी लड़की की तलाश में भटकता रहता है। उसकी बेटी किलौस एक दिन राजा के दरबार में आई उसने अपने बच्चे को गोद में लिया हुआ था। वह अपने स्तन का दूध पिलानेवाली एक गरीब धात्री के रूप में थी इस कारण उसे कोई पहचान नहीं सका। रानी मिटोनेरिया ने अपने डेमोपुन नाम के नवजात बच्चे को देखभाल के लिए उसके हवाले कर दिया। वही लड़का बाद में ट्रिपटोलिमस नाम से दुनिया में प्रसिद्ध हुआ।

हर शाम घर में चारों ओर खामोशी छा जाने के बाद डिमेटर अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर देता था। डिमेटर उस बच्चे को बहुत प्यार करता था। उसे देवत्व प्राप्त हो, ऐसी उच्चाकांक्षा उसके मन में पैदा हो गई थी इसलिए वह उस छोटे से डेमोफून को उसके सुखदायी झूले से बाहर निकालता था और बनावटी गुस्से से उसके सारे कपड़े उतारकर एक चमकते बिछौने पर उसे रख देता था। वह नवजात बच्चा हेमोफून उस बिछौने के पास ही दहकते कोयले की आग को बर्दाश्त करता था। उस अग्नि परीक्षा से उसे नई शक्ति प्राप्त होती थी। उसमें अलौकिक शक्ति यानी कुछ मानव शक्ति से बाहर के तत्त्वों की बढ़ोतरी होने लगी। किन्तु यह कहानी आगे यह बताती है कि एक दिन रानी मिटोनेरिया अस्वस्थ थी और रात में जब यह प्रयोग जारी था तभी वह अचानक डिमेटर के कमरे में घुस आई और उसने गुस्से में अग्निपरीक्षा से अतिमानव बनानेवाले देवता को धक्के मारकर उसे कमरे से निकाल दिया। उसने बच्चे को उठा लिया और अंगारे दूर हटा दिए। उसका परिणाम यह हुआ कि उसने बच्चे को तो बचा लिया किन्तु उसने अतिमानव और अलौकिक रूप धारण करने जा रहे देवता को खो दिया।

यह कहानी क्या सन्देश देती है ? सिर्फ मेहनत और त्याग से ही महानता प्राप्त होती है, यही इस कहानी का सन्देश है। मनुष्यता या देवत्व अग्निपरीक्षा में सफल होने के बाद ही प्राप्त होता है। अग्नि शुद्ध करती है। अग्नि शक्ति देती है। उसी प्रकार वह पीड़ा और कष्ट भी देती है। पीड़ा और कष्ट को बर्दाश्त करने के लिए तैयार रहे बगैर कोई भी दलित आदमी महानता हासिल नहीं कर सकता। अपने भविष्य के निर्माण के लिए उसे अपने वर्तमान के सुख का और जरूरतों का त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए। बाइबिल की भाषा का इस्तेमाल करते हुए कहा जा सकता है कि जीवन की प्रतियोगिता में सभी आमंत्रित होते हैं। लेकिन बहुत ही कम लोगों को चुना जाता है। क्यों ? वजह साफ है। इस प्रतियोगिता में महानता हासिल करने के लिए अधिकांश पद दलित लोग हार जाते हैं। क्योंकि उनके भविष्य की जरूरतों कि लिए वर्तमान के सुख का त्याग करने का साहस उनके पास नहीं होता है और स्थिर-निश्चय भी उनके पास नहीं होता।

इस पौराणिक कथा के संदेश से बढ़कर अच्छा और महान सन्देश क्या और कोई हो सकता है? कम-से कम मुझे तो इससे बढ़कर बढ़िया सन्देश और कोई नहीं लगता। मेरी राय में अछूतों के लिए सबसे बढ़िया और सुयोग्य यही सन्देश है। उन्हें जो कष्ट और पीड़ाएँ बर्दाश्त करनी पड़ रही हैं, उन्हें मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। अपनी स्वतंत्रता के आंदोलन में उन्होंने मुझसे भी अधिक लड़ाई लड़ी और कष्ट बर्दाश्त किए,

इस बात को भी मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। इन सारी बातों को जानते हुए भी मैं उन्हें अन्य कोई सन्देश नहीं दे सकता। मेरा सन्देश है संघर्ष, इन्कलाब! और अधिक संघर्ष ! त्याग! और अधिक त्याग: और पीड़ा की परवाह किए बगैर किया गया संघर्ष ही उन्हें मुक्ति और स्वतन्त्रता दिला सकता है।

अछूतों को विद्रोह करने और प्रतिकार करने की सामूहिक इच्छा-शक्ति में परिवर्द्धन करना चाहिए। उनके कार्य की पवित्रता पर उनका पूरा और स्थिर विश्वास होना चाहिए। अपना लक्ष्य हासिल करने के लिए उन सभी को एक साथ स्थिर निश्चय करना चाहिए। उनका कार्य इतना महान और उनका उद्देश्य इतना विशाल है कि सभी अछूतों को इकट्ठा होकर यह प्रार्थना करनी चाहिए, 'जिस समाज में हमारा जन्म हुआ उनका उद्धार करने के अपने कर्त्तव्य में जो लोग व्यस्त हैं वे धन्य है! गुलामी के खिलाफ चल रही मुहिम को आगे बढ़ाने के लिए जो लोग तन, मन और धन से तथा अपनी उमड़ती हुई तरुणाई को कुर्बान करने की कसम खाते हैं, वे लोग धन्य हैं! अछूतों को उनके इन्सानियत के हक पूरी तरह से हासिल होने तक जो लोग अच्छे बुरे की परवाह किए बगैर, सुख और दु:ख की परवाह किए बगैर, खतरे-तूफान, मान-सम्मान की परवाह किए बगैर काम करते रहेंगे, वे धन्य हैं!

बोध प्रश्न

आपने निबंध पढ़ा। अब नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए-

1. डा० अंबेडकर को व्यक्ति-पूजा कैसी लगती थी ?
   (क) अच्छी (ख) नापसंद
   (ग) बहुत अच्छी (घ) पसंद
2. महानता कैसे प्राप्त होती है?
   (क) पूजा करने से (ख) सुंदरता से
   (ग) मेहनत तथा त्याग से (घ) धन से
3. भविष्य के निर्माण के लिए वर्तमान में किस चीज का त्याग करना पड़ता है ?
   (क) सुख का (ख) दु:ख का
   (ग) सुंदरता का (घ) कष्ट का
4. त्याग और पीड़ा की परवाह किए बगैर किया संघर्ष क्या दिला सकता है?
   (क) पराधीनता (ख) दु:ख
   (ग) महानता (घ) सुख-सुविधा